करोट फेरैत गामक निदर्शक : कैसनटी

□ सियारामझा 'सरस'

नाम रहनि कृपानन्द ठाकुर। आशय लगबैत छी–किनकर कृपा? किनका उपर कृपा? आनन्द–तँ से कोन तरहक वा कोन बातक आनन्द? स्वयं आनन्दक अनुभूतिमे डुबैत आकि अनकहु ताहिमे डुबबैत? एहन–एहन बहुतो प्रश्नक कदमदीकेँ शांत करबाक चेष्टा थिक ई व्यक्तित्वाची निर्बंध!

□ **परिसर ओ परिवेश** : बात छठम–सातम दसक, गत सदीक थिक। बात आजुक मधुबनीजिलाक थिक जे ताहि दिनमे जिला नहि, अनुमण्डले छल आ रूप तकर, बाकलम मलंगिया–'एकटा ठिठुरल शहर–मधुबनी' सैह छलैक। ठिठुरल किएक, तकर खीसा बड़कीटा छैक मुदा अति संक्षेपहिमे कही–तँ एक साल बाढ़ि, तँ दोसरमे अकाल! फेर उगडुब–डुगडुब, तँ फेर सुखाड़े–सुखाड़! तैं जमक गाम–घर, लोकवेद, जीवा–जन्तु–बनस्पतिकेँ जेहेन हेबाक चाही– गरमीमे नंग–धरंग तँ जाड़मे कठुआएल–सिमसिमाएल! देह झाँपए, तँ टाङ उघार आ टाङ झाँपए तँ आङ उघार!

ताही जिलाक मध्यवर्ती क्षेत्रांतर्गत कमला–बलानक पछबारिए पारमे अवस्थित अछि–एकटा गाम। नाम तकर मेंहथ। की से, तँ मेंहमे कहियो हाथी जोतल जाइत छलै–तैं मेंहथ! बात से फुसियो नहि थिक। 1950–'55 क आसपासहु मे चारिटा हाथी रहैक, से आँखिक देखल साँच थिक।

परिसरक आरो ग्रामांचलक चर्च करी, तँ कमलाक पुबारि पारमे महरैल–कन्होली–झंझारपुर बजार–टीशन प्रभृति, तँ पच्छिम दिस कोठिया–पररी–रैमा, मराम–विजय कोइलख आदि। उत्तर दिस गोपलखा–रामखेतारी–शंकरपुर तँ दच्छिनमे महिनाथपुर–नरुआर–हैंठी–बाली, भैरब–थान विदेश्वर–थान, लोहना–कथना आदि।

एहि दसकोसी प्रक्षेत्रक रहन–सहन साधारण–गृहस्थो सैह! हँ, किछु सोति–योगक कारणें लोहना–रुपौली–कथना, मराम–

अे कौतूहलक मान-मर्यादा कनेक ओपल-तोपल; हमरा गाममे दौ-नौ, त' ओइ गामसबमे नौ-तेरह होइक। हमहर 'है'-हे-ग्रौ' चलैक, त' ओमहर अबै 'ग्रौ-ग्रौ-ग्रौ'! हमहर रोटी माने- मडुआ-खेसारी-चाउर-बदाम-मकइ पर्यन्त, त' ओमहर शुद्ध गेहूँक सोहारी-खाईं से चाउरक हो किंवा गहूमक!

कहबाक आशय जे हनकहि दूर मे अकाश-पतालक अंतर रहैक- रहन-सहन, खैन-पीन आ सोच-विचार मे!

□ शिक्षा : मूलभूत सुविधाक अकाल:

गाममे छल एकटा लोअर प्राइमरी इसकूल। इसकूलक बगलमे कनेकटा शिव-मंदिर आ तें आगाँमे गामक जीवन-रेखा— बड़का पोखरि। ओना, छल त' आरो बड़का-बड़का पोखरि— समिया-पोखरि, डकही पोखरि मुदा से सब गामसँ बाहर; बाबू-बबुआनक दफानल—कोंट ल'क' बेढ़ल जकाँ!

मिडिल इसकूलक पढ़ाइ करत कओ, त' डेढ़ किलोमीटर दूर, गाम टपिक' कतेठिया-इसकूल। ई बोर्ड मि. स्कूल छल (ओहिना ...)। हतय चारू दिशक पाँच गामक छौड़ा अबैत छल -चौथा किलासमे, तें मेसँ मोटे 50% सातमा पास कए बहराइत छल, बाँकी 50% हरवाही-चरवाही, खेती-किसानीमे लागि जाइत छल आ से नै, तें सीधे कलकत्ता!

हाइ इसकूल सातम दसकमे आबिकए दू-टूटा खुजल छल— मराम आ भैरव-थानमे। दुनू खूँटी टटघर, गाम-गामसँ बाँस-खद-खुट्टा- बड़ेरी माँगि-चाँगिकए बनल। तकर तेहने शिक्षको-स्टाफो!

तेहनाठाम, जकरा व्यवस्थित शिक्षा चाही, जे किछु खास करए-कराए चाहए— से जाथु झंझारपुर-केजरीवाल उच्चाइस्ल विद्यालय अथवा सरिसब हाइ इसकूल अथवा टैटमे दम होनि, त' देखथु मधुबनी-दरिभंगा!

एतबा शिकस्तो आ संघर्षक अछैतो 1960 ईस्वीक आसपास अबैत-अबैत गाममे दू गोटे एम.ए. पीएचडी. कलकत्तामे प्राध्यापक, गोट छबेक स्नातकोत्तर एवं पाँच-छबटा स्नातक डिग्रीधारी भए गेल रहथि, जे सबके-सब गामसँ बाहरे प्रवासमे छलाह। दुर्गा-पूजा, दीया-बाती-छठि, फगुआ तथा गरमी-छुट्टिमे ई लोकनि अवकाश पाबि गाम अबैत छलाह, तें तहि समयमे गामक प्रायः सबहु टोलमे हहर-महर जकाँ रहैत छल। तें दीया-बाती-छठि लगाति अथवा सरस्वती-पूजासँ फगुआक बीच 'युवा नाट्य-कला परिषद' द्वारा दूटा नाटकक मंचन होइत छल।

सैं, जे कहैत रही शिक्षा-दीक्षाक मादे, से एकटा असाधारण समस्या छल ताहि दिनमे। 95% धरि ब्राह्मणोक परिवार खेतिए-गृहस्थी आ माले-जाल पर निर्भर छल। शेष जातिमे थोड़-थीड़ यादव, मलाह, धोबि, हजाम, पासमान, राम, मँडल, कमार-सोनार आदिक हाल आर बेहाल रहैक! जकरा हर जुआठी पर आफद, तै घरक छओँरा-मारर इसकूलक सपना की देखत, कोना देखत!

मरि गामक दस-बारहटा परिवार जे सुभ्यस्त (खाँयत-पीयत) कहबैत छल, तिनके बालकनिक बालक मिडिल औ हाइ इसकूल देखैत छलाह। धी-बेटीक, तँ प्रश्ने उठाएब व्यर्थ छल। परिनों दस-बारह परिवारक कन्यालोकनि, गाममे लोअर प्राइमरी इसकूलक अछैतो नीक जकाँ साक्षर नहि भ' पबैत छलि। कहबी रहइहे छल 'चिरड़ी-पुरुखी लीखए आबि गेलौं, तँ बहुत भेलै'! मुदा, ताहू विषम परिस्थिति मे 1961-62 ईस्वीक आसपास गामक दूटा बेटी-उर्मिला आ सोनदाइ झंझारपुर-स्कूल सँ जेना-तेना प्रवेशिका परीक्षा पास कएने छलि (ई दुनू स्वर्गीय कलकतिया प्रधानकलोकनिक सहोदरा छलीह, तेँ हुनका अदम्य साहसक परिचय दए सकल छलीह)।

एहेन अन्धकारक समयमे, जँ बहुटोलीक एकटा सामान्य मध्य-वित्त परिवार (स्व. जयकान्त तथा अनकान्त ठाकुरक) मे सँ एक उच्च मेधा-प्रतिभाक धनीक बालक — [illegible] (जन्म–1939 ई.) बहरेलाह आ किजरीकालउच्च विद्यालय, झंझारपुर सँ प्रथम श्रेणीमे (1957) प्रवेशिका परीक्षा पास कएलनि, तँ ई सहजहिं गामक लेल गौरवक एवं इलाकाक लेल अचंभेक विषय छलैक। एतय उल्लेखनीय थिक जे उक्त विद्यालयक हैक-रेकार्ड जिला स्तरपर ताहि तरहक नामी-गामी छलैक। लगातार कएक वर्ष पहिनेसँ लगातार कएक वर्ष बादधरि ई स्कूल 'वाट्सन उ. वि. मधुबनी, जिला स्कूल दरभंगा एवं एम. एल. एकेडमी (सरस्वती स्कूल) लहेरियासराय कें टक्कर दैत रहल छलैक। तीनूमे क्रमशः ठाकुर प्रसाद सिंह एम. ए. द्वय डिप. एड. (अंग्रेजी), चन्द्रनाथ मिश्र (संस्कृत-सैनी) एम. ए. द्वय, डिप. एड. (मधु.), झिंगुर कुँवर, एम. ए. द्वय, डिप. एड. (ल. सराय) सन्यभरिमे सुख्यात विद्वान शिक्षकेटा नहि, बल्कि कठोर प्रशासकरूपें तनिके कुख्याति बूझल जाइत छलाह। झंझारपुरक उक्त विद्यालयमे जहिना [illegible]बाबू सन कठोर अंग्रेजीक विद्वान, दुर्गा-हरणबाबू औ पीताम्बर लाल दास सन-सन स्वीकृत विज्ञान-शिक्षक, श्यामबाबू-विन्धुदेवबाबू सन-सन हिन्दी आ सामाजिक विज्ञानक स्वर्ण-पदक प्राप्त शिक्षकादिक मार्गदर्शन उपलब्ध छलैक; तहिना वाट्सन (मधुबनी) क चर्च करी, तँ डा. श्यामचन्द्र झा (भवानीपुर, पंडौलक) हिन्दी-अंग्रेजीक स्नातकोत्तर, डा. देवनारायण झा (सरहद-शाहपुरक) एम. कॉम. स्वर्ण-पदक प्राप्त (वाणिज्य), विज्ञान-मैथ्स शिक्षक (खोंयरडीहा-वासी) तेहने भौतिकी-रसायन औ गणितक धुरन्धर, कुलबाबू मदनलाल दुइ भाइ तेहने अंग्रेजीक टॉपर स्नातकोत्तर विद्वत्जनसँ सुसज्जित छलैक औ विद्यालय। प्राचार्यक अनुशासन केहन, तँ दू-दूबेर अपन बालककेँ टेस्ट-परीक्षा (प्री-बोर्ड) मे सेन्ट-अप नहि होबए देने छलाह किएक तँ हुनका कलमसँ अंग्रेजी विषयमे 30 नम्बर नहि आनि सकल छलनि! तखन-तेहेन होइत छलैक राष्ट्रपति-सम्मानसँ सम्मानित शिक्षक ताहि दिनु मे!

---आ एम. एल. एकेडमी (दरभंगा) तँ ताहू सबसँ 'वज्रादपि कठोराणि' प्रशासक-सुयोग्य प्राचार्य-(राष्ट्रपति-पुरस्कृत') छलाह — गंगापट्टी (ल. सराय) वासी झिंगुर कुँवरजी। पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (संस्कृत-हिन्दी शिक्षक) सहित सब विषयक शिक्षक गण तहिना एकसँ बढि एक उद्भट्ट विद्वान! तेँ, तत्कालीन अविभाजित बिहारक बोर्ड परीक्षामे क्रमांक एकसँ 10 धरिक मेधा-सूचीमे पाँच-पाँच, छव-छवटा जगह थैह स्कूल सब छेकि लैत छलैक।

एतबा सुराफैलाइसँ ई निरन्तर दए रहल छी; जिनक तँ एखन स्वयं केजरीवाल स्कूल, मऊभरपुर एवं वाट्सन स्कूल, मधुबनीक छात्र रहि, हायर सेकेन्डरी करबाक तथा झिंगुर कुंवरजी मेहथक समकक्ष छलाह। कृपाबाबूक प्राय: सहानुभूति रहल हैमिन - एक आर ओहने तेजस्वी छात्र - रामबहादुरजी जिनकर हाथ पकड़ि लए गेल रहथि अपन जमाए बनएबा लेल (किन्तु ई विद्यार्थीक इच्छाक विरुद्ध)! फलत: विवाहक दुइए-चारि दिनक भीतर ओ अकस्मात् रूपेँ कालक गालमे समा गेल छलाह। एहि घटना आयक दुर्घटनाएँ सम्पूर्ण बस्ती दिन मे, मास मे, कएक वर्ष धरि शोकाकुल रहल छल तथा तकरे प्रतिफलेँ तीन-चारि बरखक अन्तरालेँ परीपट्टाक नामी वा अपनासन एकमात्र लाइब्रेरी - 'श्री रामबहादुर सार्वजनिक पुस्तकालय'क स्थापना सम्भव भेल छल। ओहि होनहार युवकक श्रद्धांजलि अर्पित करैत रहि अनन्तर कथाकेँ समाप्ति विराम दैत छी।

ई, करैत जे रही - 1957 ई. मे मैट्रिक आ 1959 मे आर.के. कॉलेजसँ आइ.एस-सी करैत कृपानन्दजी एम.आइ.टी. मुजफ्फरपुर सँ सिविल अभियांत्रिकी मे (1959-'63) उत्तीर्ण भइ अभियंता बनि गेल छलाह। हमरा मोन पड़ैछ, हिनका मायपरसँ पिताक छत्र-छाया अकालहि उठि गेल छलनि मुदा अग्रज श्री नित्यानन्दजीपर ताहि अन्तर-विहाड़िक कोनोटा प्रभाव नै पड़ल छलनि। ओ अद्भुत अभिभावकत्वक निर्वहन करैत छलाह!

हिलकोर जे लहरि बनि गेल : टोलिया-बजानियाँ बजबाकए पूजा-प्रसाद जे भरि गाम बँटायल छल। कृपानन्दजीक सफलता ओ बिहार सरकारक सहायक अभियंता रूपेँ योगदान (1963) देलापुर, तकर हिलकोर गोटे-समाज धरि सीमित नहि रहल छल। प्राय: गोटेक सालक आगाँ-पाछाँ नरुआरसँ स्व. विकल झा (मैहथेक भागिन) और ओहि बालक श्री हरेकान्त झा (बोर्ड-टॉपर, ओही केजरीवाल विद्यालयसँ) सेहो, कोठिया तथा महरैल गामसँ दु-दु अभियंता (श्री हरिवल्लभ मिश्र, डीडीए. दिल्लीसँ विख्यात); फेर 65-66 मे, हमरे बैचक बोर्ड-मेरिट-लिस्टक नारायण झा (नरुआर) अभियंता एवं ओही अवधिमे पुन: हमर मित्र-द्वय श्री नरेश झा (आब स्व.) एवं श्री दुर्गानन्द झा लौकिक इंजिनियरिंग-डिप्लोमा प्राप्त करब- महत्वपूर्ण परिवर्तनक दौर छल, से कहि सकैत छी। ओही बीचेँ, कथनासँ सेहो एक जे.ई. (नाम प्राय: वेदानन्द मिश्र छलनि, आब स्व.) भेल छलाह। हमर एक सहपाठी गौआँ लक्ष्मणजी सेहो अभियंता बनल छलाह।

शिक्षाक आन-आन क्षेत्र वा विधा मे सेहो एकटा द्रुत बदलाओ ओहि अवधि मे आयल छल, तकरो अकानल जा सकैछ; यथा गोटेक सालक आगाँ-पाछाँ इन्दुकान्तजी एम.ए. राजनीति शास्त्र, सचीन्द्र कुमार झा (फुलबाबू) एम.ए., रामनारायण झा, बी.कॉम./एम. कॉम., पीताम्बर झा (मुटकुन)क आइ.एस.सी. करैत नेभी-ब्वाइज मे भरती, तृप्तनारायणजीक ओ जयनारायणजीक स्नातकीय डिग्री एवं सत्यनारायण ठाकुरक बी.एससी. प्रतिष्ठा तथा भराम उच्चविद्यालयमे विज्ञान शिक्षक नोकरी - प्राप्ति प्रभृति किछु एहेन-एहेन दृष्टान्त थिक जे तत्कालीन शैक्षिक संक्रमण-कालक जागृतिकेँ रेखांकित करैत अछि; जे बढ़ियार-महिसवार आ पहलमान' मेंहथकेँ पढ़ैत-लिखैत, आयु बढ़ैत तथा सुशिक्षित होइत मेंहथक रूपेँ चिन्हारए देने छल। एही नेओं पर परवर्ती पीढ़ीमे हम, कृष्ण कुमार झा, केन्द्रिय उत्पाद आयुक्त, दिल्ली, मोहन झा डॉक्टर (एम.बी.बी.एस.)

आ विजय कुमार ठाकुर (कार्यपालक अभियंता, कोल इंडिया, कृपाबाबूक सुपुत्र-अपाद) एवं आजुक ई-पत्रिका-विदेह सहित अनेक प्रकारक ई-क्रांतिक मैथिली-साहित्यमे प्रथम सूत्रपात-कर्ता श्री गजेन्द्र ठाकुरक नामोल्लेख जरूरी बुझैत छी। अ द च सातम दशकमे उठल ओ हिलकोर आइयो लहरि बनि-बनि आयुष्मती प्रीति ठाकुर धरिक तटकें स्पर्श करैत देखल-अकानल जा सकैछ।

☐ गौआँ-घरुआक बीच के.एन.टी. :-

कृपानन्दजी जखन अपन एवं अपना परिवारक उत्थान केर सोपान पर पैर टिका रहल छलाह, ठीक ताही अवधि (सातम दशकक आरम्भिक काल) मे यथा-पूर्वोक्त राम बहादुर जीकना शोक-प्रसंग सेहो गौआँकें व्यथित आ मथित करने रहैक। ई कहब कठिन अछि जे हमर अड़ोस-पड़ोसक ग्राम-समाज एहेन दुर्घट प्रसंगपर कोन रूपक प्रतिक्रिया दितय किन्तु हमर गौआँ समाज कोना रिएक्ट कएलक, से तँ हमरा आँखिक सोझाँ झलकैत अछि मुदा से प्रसंग कतेक धमिल छ।

• विद्यार्थीक सहायता :

1961 ई. मे हमर नामांकन मराम आ कोठिया हाइ स्कूल (जे सम्प्रति भैरबथान मे अवस्थित अछि) कें अनठेबैत, कमरपुर-केजरीवाल स्कूलक आठम वर्गमे, हमर इच्छाक तथा अपना जिद्दक भान रखैत पिताजी करबओने छलाह। जाहिमे तकर कारण यैह कृपानन्दजी छलाह। से बात साल-दू-सालक बाद तखन बुझबामे आयल जखन एकबेर गरमीक तातिलमे 'एवरी-डे-साइन्स'क पोथी लए कृपानन्दजी लग पढ़बा लेल पहुँचल रही। पैतृक दक्षिनबरिया भीर पर पश्चिम दिस घर-आँगन आ पूब दिसक पूबे मुहक बड़का दलान छलनि। ओहि समय धरि पितियौत लोकनि— सीतारामबाबू (एल.आइ.सी. मधुबनीक प्रधान सहा.) एवं पं. बच्चा ठाकुर, कुलदीपबाबू—सभक बैसाइ संगहिं छलनि। तैं दलान सदिखन भरल-पूरल रहैत छलनि। कथ-कथ जोड़ी तास चलैत रहैत छलैक। दू-तीनटा चौकी पर सैह खेलबाड़ीसभ देकने रहथि मुदा उत्तर-पूबक कोन पर एककात लगाक' पटिया पर एकटा सतरंजी देल आ तैपर चुपचाप बैसल, कोनो मोटगर-गतगर अंग्रेजी-किताबमे डूबल कृपा बाबू। कृपाबाबू एहि समय धरि अपना संगी सभक बीच के.एन.टी.क नामे ख्यात भ' गेल छला हमरा देखिक' सभ खेलाड़ीकें जेना अचंभा कि वा अनसोहांत लागल सन बुझना गेल छल। कदाचित ई जे आन टोलाक ई कोना...? ई किएक...? मुदा ओ तँ अकचकाएल रहथि, कि एक त' हम एक दिन पहिनहि पोखरिमे नहाइत काल निवेदन कएने रहियनि जे भेटति चाही आ ओ सहर्ष तकरा स्वीकारैत 'आबि जाउ' कहने छलाह। ओना, ई एकटा दीगर बात छल जे हमरा गीतहारक रूपें किंवा सज्जन-सोंहुँज छात्रक रूपें सभरो गामक सभ वर्गक लोक चीन्हैत अथवा नहुँमरि आदरो दैत छल।

— हँ विद्यार्थी! की पढ़बाक अछि?

— एवरी-डे-साइन्स मे 'प्रयोगशालामे ऑक्सीजन गैसक निर्माण'।

ओ हमर पुस्तक देखलनि उनटा-पुनटाकय आ एकहि सुरे तीनटा

अध्याय पढ़ा देलनि आ काल्हि केर अगिलेकरमे तीनू चैप्टरक प्रश्नोत्तर लिखि आनबा लेल कहलनि। बीच-बीचमे बारम्बार 'विद्यार्थी' कहि सम्बोधित करैत रहथि। अगिला दिन हम होम-वर्क देखि प्रसन्नता व्यक्त करलनि आ लगभग दू घंटा समय दए व्याकरण ओ किताबक शंका-समाधान कए देलनि। हम धन्य-धन्य भए गेल रही! आ तखन फेर हमरा घुरिक पूर्ण, एक-एक शिक्षकक हाल-चाल सहित। हमर पढ़ाइक एवं प्रत्येक विषयक निश्चित नैयायिक मंत्र देने रहथि; अंग्रेजी भाषा तथा समाज अध्ययनक गंभीरता सँ, रटिकए नहि, अपना भाषामे अभिव्यक्त करबाक बोध देने छलाह। यद्यपि हम सम्बन्धित विषयक कॉपी-किताब लए-लए डा. परशुरामजी (अंग्रेजी विषय), देवनारायण ठाकुरजी (वाणिज्य-बुक कीपिंग) आ राजेन्द्र मल्लजीलग अर्थशास्त्र विषयक पढ़ा-करैत लैत रहलहुँ—बादहुमे, स्वाध्यायो सएर घरि मुदा प्रथम 'पथ-प्रदर्शक तारा' तँ वैह कृपानन्दजी छलाह। हँ, एहि सभ सीनियर्स केर महत्ति लेल हमर पिताजी पहिने आरि-धारि बान्हि अनने छलाह! हुनकर उदय-वैभव चारू टोलमे छलनि आ हुनकर शिक्षकत्वक खूब आदर रहनि (अपन दियादक घराइन छोड़िकए बाँकी भरि गाममे)।

• **पुस्तकालय-प्रसंग**: आब सर्वाधिक महत्वक बात समाजक दृष्टिकोणें! वैह 1960-'62 केर समय छलै जखन स्व. रामबहादुरजीक नाम पर सार्वजनिक पुस्तकालय खोलबाक निर्णयक बात उठल छल। उपर्युक्त प्रत्येक सीनियर लोकनिक पुनः नामोल्लेख जरूरी नहि बुझैत, संक्षेपमे कहब जे चारू टोलक न्यूनतम दू-दू वा तीनियो-चारियो गोटेकेँ मिलाए एकटा अस्थायी कार्यसमिति जकाँ बनल छल सर्वप्रथम, प्रायः दीयाबाती-छठिक अवकाशमे। एहिमे ठकुरटोलीक प्रतिनिधि कृपेबाबू छलाह। नीक बात ई जे ओ जखन नहियो रहथि, कोनो अवकाशमे नहियो आबि पाबथि, तैयो नित्यानन्द ठाकुरजी भार टेकि लैथिन आ काज बिथुत नहि होइक।

समर्थ पहिने तय भेलैक जे एहि प्रस्ताव पर रामबहादुरजीक परिजनक स्वीकृति लेल जाए। हुनक भाइजन—कमलूबाबू, गौरीबाबू (मास्टर साहेब) आ राधाकान्तबाबू शोकाकुल होइतो, सहर्ष स्वीकृति देलखिन। तत्पश्चात गारजनक स्वीकृतिसँ चारि-पाँच कनीय सदस्यलोकनि आँगन जाए भाउजीओं भौजीक सहमति एवं प्रथम चन्दा/सहयोग-राशि प्राप्त करैत गेलाह। ताहि नवतुरमे एहि पाँतीक लेखक सेहो रहथि। एहि योजनाकेँ कार्य-रूप देबामे कृपानन्दजीक प्रभावशाली व्यक्तित्व सटीक कुंजीक काज करैत छल, किएक तँ ई निकटस्थ पड़ोसियो तँ, सहतुरियो रहथिन।

तखन, दोसर प्राथमिकता छलैक स्थान-चयनक। कैकटा जगह केर प्रस्ताव आयल छलै विमर्शक क्रममे— दछिनबारि टोलमे लालबच्चाक पोखरिक उतरबारि भीर पर, तत्कालीन प्राइमरी स्कूल लग, कृष्णदेवजीक (बच्चनजी, मुखिया) मिसरटोली भगक कलममे, वर्तमान समयक दुर्गास्थान लग आदि---आदि।

लालबच्चा लग मुँह डानल जाए, से फूलबाबूक सहमतिक अछैतो गामक बेसी युवककेँ नहि अरघलैक, किएक तँ बलही-पोखरि लगक फुटबॉल-मैदान पर जबरदस्ती टेक्टर चलबाकए दखल-दिहानी वा कब्जा कए लेब ओहुना गामकेँ असाधारण पीड़ा देने छलैक; से एकेक जल्दी बिसरबा ले नयो तैयार नै छल। सर्वानुमति प्राथमिक विद्यालयक सामने स्थान पर छलैक ओतए प्राय: 7 कट्ठा जमीन इस्कूलक नामे कहियाक दान-पत्र मे दर्ज रहैक। बाँकी ताहिसँ दछिन शिव-मंदिरकेँ बाईत, बड़का-पोखरिक मोहारे रहैक। ताहिपर पूरा सरिसबे-सोंगुर (आठ आनाक मालिक गाम परहक पटीदार आ आठ आना कचहरी टोल) लोकनिक स्वामित्व छलनि।

तखन फेर कचहरी टोलक ओ पैशाजी (पटना सचिवालय) एवं गणपतिजी (कलकत्ता) लोकनिक पत्रानुमति लैत गाम परहक पटीदार मे राजेन्द्रजी, इन्द्र (पहिने-मुखिया) इत्यादिक सहमतिसँ यैह स्थान फाइनल भेल छलैक। तखन शुरू भेल बाँस-काठ, खढ़ आ ईंटाक लेल बैहरी। चारू टोलक लोक बढ़ियाँ मदति कएने छल — अन्न-टाका, बाँस-काठ-खढ़ सब लाक'। तेँ, प्रारंभिक योजनाक टटघरकेर बदलामे पजेबाक देबाल पर बंगला छबा गेल छलै — तीन दिस बरंडा सहित।

जतए धरि मोन पड़ैछ, 1962 ई. मे एहि पुस्तकालयक पंजियन तथा ओहि वर्षसँ सरकारी अनुदान (पुस्तक-क्रयार्थ) तथा 1963 मे केन्द्र-सरकारसँ रेडियो-सेट-स्पीकर आदि प्राप्त भए गेल छलैक। पक्का रसीद छपल रहैक आ तैयार कलकत्ता-पटना वासी सँ चन्दा-नामी अबैत छलैक, ताहिसँ बिजली कनेक्शन, पटिया-सतरंजी आ दुटा काठक अलमारी प्रभृतिक व्यवस्था भेल छलैक। संक्षेपमे कही, तँ एहि सफल अभियानक साफल्य श्रेयथी इन्दुकान्तजी, सत्यनारायण ठाकुरजी, कृपानन्दजी, मधुकान्तजी, कृष्णदेवजी (बचनी मुखिया), हरि-नारायणजी ओ कृष्णदेवजी (मास्टर सा.) तथा इन्द्र (मुखिया) केर अनवरत प्रयत्ने भेटल छलैक मेहथकेँ। तेँ, पहिल पुस्तकालयाध्यक्ष इन्दुकान्तजीकेँ चुनल गेल छलनि। हुनक सहयोगमे (1963 सँ 1970 धरि) लगातार यैह सरसजी (जे 69-70 मे सी.एम. कॉलेजक छात्र रहैत 'सरस' पदवी सुमन-किरण-मधुप जी लोकनिक मुहसँ पओने छलाह) रहिकए संचालन-भार सम्हारने छलाह।

- **नाट्य-परिषदक प्रसंग:** गत सदीक छठम दशकमे मेहथ-महिनाथपुर (दुनू गामक एकहि पंचायत) केर किछु उत्साही युवक-प्रौढ़ कलाकार लोकनि मीलिकए नौटंकी-पार्टी लगभग 8-9 साल धरि चलौने छलाह। दछिनबारि टोलक रमाकान्तजी (40 वर्ष पूर्वहि स्व.) मुहगार-कनगार आ किछु पढ़लो-लिखल छलाह। बढ़िया सन-सन मोंछ आ किछु-किछु धोनी टाइपक झोंटो राखथि। वैह छलाह दलपति आ सुल्तान डाकूक भूमिकामे जे असाधारण अभिनय करथि।

गामक आओर किछु चूनल-बीछल कलाकारमे अछैत टोलक बिशेसर उर्फ बिसाऊ झा नामी जोकर आ विलक्षण ढोलक-नगाड़ा-वादक छलाह। तहिना छलाह मिसरटोलीक रघुवंशजी जिनका मौगियाही छवि-छटाक संग-संग फिल्मी गीत गायनक लुरि-भास सेहो छलनि।

गामे-गाम उपनयन, विवाह, कोजगरा वा अन्य अवसर पर ई पार्टी खट्-खटा कऽ दू-दू, तीन-तीन राति प्रति राति, भोजन-नेवत सहित पबैत छल [illegible]। ओहि दिनमे जँ खा-पीकऽ 50-60 टाका कए हिस्सा पाबए कलाकार, तँ से पैघ बात होइक। अस्तु।

ओहि पार्टीक दुरवस्था-निष्क्रियतापर एकटा शून्यताक अनुभव मरि(?) गामक लोककेँ होइत छलैक, तकरे पूर्ति हेतु महिनाथपुरमे हरिनारायणक नेतृत्व मे एकटा रामलीला पार्टी शुरू भेल छलै आ मेहथमे(?) पढ़ुआ-गुनुआ बहुत, तेँ नाट्य-परिषदक सूत्रपात भेल छलै (1960-61क आसपास)। जेनाकि ऊपर कहि आयल छी: सार्वजनिक पुस्तकालयक सफलतासँ सबहु टोलक शिक्षितेटा नहि, अशिक्षितो-अल्प-शिक्षितो युवा-वर्ग एक सूत्र मे बान्हा गेल छल आ खूब भव्य तरहेँ शारदा पूजनोत्सव आरंभ भेल छल ओहि प्राथमिक विद्यालयक प्रांगणमे। एहि अवसर पर दू राति नाटक खेलेबाक निर्णय भेल रहैक (प्रायः 61-62मे)। एक राति सरदार भगत सिंह (हिन्दी खेला) आ दोसर राति पं. गोविन्द झा (हालहिं स्व.) द्वारा लिखित आ बहुचर्चित मै. नाटक बसात तय भेल छलैक।

हमरा नीक जकाँ मोन अछि जे सरदार-भगत, जनरल डायर, कर्नल (वा मेजर) सान्डर्स, लाला लाजपत राय, असफाक-उल्ला, राजगुरु आ बटुकेश्वर दत्तक संग-संग चन्द्रशेखर आजादक भूमिका लेल नवके तैयार एकताक चट्टकेरि मसकैत-मसकैत बाँचल छल। आ से, धन्य गोपेशजी एवं मधुबनजी! अंततः येह दुनू गोटे मुख्य-मुख्य पात्रक भूमिका लेल जे औपबंधिक सूची प्रस्तुत कैलनि, तकरा तत्कालीन दूटा करीब सामन(?) श्यामबाबू (इन्द्रकान्तजीक काका) आ कचहरी टोलक लालबाबू (जे प्रतिष्ठित डाकबाबू छलाह) केर सक्रियतासँ सलटाओल गेल छल।

पहिल राति किछु महत्वपूर्ण अंग्रेजी-हिन्दीक कथोपकथनकेँ बजबाकऽ (इंटरव्यू जकाँ) देखल-परेखल गेल आ तखन भगत सिंह मधुबनजी तथा अंग्रेजीक शानदार उच्चारण तथा प्रवाहकेँ देखैत, व्यक्तित्व-आकलन करैत, कृपानन्दजीकेँ सान्डर्स ओ डायर-दुनू भूमिकाक लेल फिट पाओल गेल छलनि मुदा दुनूक निर्वहन एकसंग संभव नहि छलैक, से देखैत सान्डर्स साहेबक भूमिका करैत रहथि ई। ओ स्वयं परित्याग करैत रहथि। ओ फ्रेंच-कट मोछ-दाढ़ी, फूलल-फूलल गाल पर ललछौंह फाउन्डेशन आ तेहन मुर्दाशंखक रीगन(?) आ माथापर अंगरेजिया हैट....! →

दुनू अंगरेजक डॉयलॉग जत'—गत' बेसी लमगर रहैक आ शब्द कठिनाह, तत'- तत' बहुत कारीगरीसँ एकटा- दूटा कए हिन्दीक वाक्य सेहो ओहि तेबरक, घोँसिया देल गेल छलैक जाहिसँ ग्रामीण-तमशगीरक लेल बोधगम्यता सहज भए गेल छलैक। नाटकक सफलताक 'ग्राफ' कतबा आ केहन दिव्य छल, से एहिसँ बूझल जा सकैछ जे दुनू अंग्रेजवा खलनायककेँ दर्शक दीर्घा सँ जुत्ता- चप्पल आ ढेढा पर्यंत देखाओल गेल छलैक तथा 'मार नै रौ- अइ बनरमुहाँकेँ पटकिक' ओंघा-बाघा कर नै रौ'—तेहन- तेहन टिप्पणी सभ बेर- बेर उछलल छलै। ताहूसँ आगूक बात ई भेल छलै जे चारिटा मेडल (रजत) लाले-भाइ (लालबाबू, कचहरी टोल तथा दूटा मेडल श्याम-भाइ दए-दए सम्मानित-प्रोत्सा-हित कएने छलाह कलाकार लोकनिकेँ। आ कृपा-बाबू दुनू गोटेक सूचीमे एक नम्बर पर रहथि। आ ताहुसँ आगाँक महत्वपूर्ण उपलब्धि ई भेल रहैक जे ठीक साल-डेढ़ सालक भीतरे कोनो शुभ अवसर पर एहि नाटकक मंचन फेर करए पड़ल छलैक नाट्य-परिषद्केँ आ ताहि बेर लाले-भाइ अन्य खर्चक संगे- संग 500/- टाका देने रहथिन—एक सेट परदा एवं थाही-ड्रेस कीनबाक लेल। ई सभ यथासमय दरभंगा सँ किना लेल रहैक

लग-पासक गाम—कोठिया, पट्टी, मोहिनाथपुर, भराम-गोपलखा आदिक लोक उनटिकए अबैत छल खेला देखबा लेल। वरिष्ठ गारजन लोकनि अनुशासन आ स्त्रीगण-पुरुषादिक बैसबाक समुचित व्यवस्था-भार देखैत छलाह। कएक बेर बी.डियो, सी.ओ. तथा डिप्टी-इन्सपेक्टर (स्कूल) आयल रहथि आ भरि-भरि राति इस्कूलक बरंडा पर बैसिक कुरसी लगाए, लालबच्चा (पूर्व विधायक मधेपुर वि.स.), लालबाबू, कमलाबाबू, गौरीबाबू, श्यामबाबू, बाबुजी झा (पंचायत-मुखिया) फुलसियाहा बच्चा (कोठिया) सन-सन संभ्रान्त लोकनि बैसैत छलाह। ई लोकनि बिना निवेदने अपना मोने सय-पचास टाकाक मदति देल करथि परिषद्केँ। ई क्रम एकटा परम्परा बनैत '60-'61 सँ 80-81 धरि चलैत रहल छल जाहिमे क्रमशः दिनेशजी, नरेशजी, दुर्गानन्दजी, रवीन्द्र, उदयचन्द्रजी, ताराकान्त, हीरा लाल, लक्ष्मणजी (अभिनेता) आदि जुड़ैत चल गेल छलाह। एकरे कहैत छैक—'हमनवा आते गए और कारवाँ बढ़ता गया'! सरस्वती पूजाक संग-संग नाटको देखबाक हेबार जागैत छलैक लगपासक सभ गामकेँ।

• **पुस्तकालय-प्रसंग** : बहुत बात पहिनहुँ चर्च भेल अछि, तकरा दोहरेबाक प्रयोजन नहि। एतबा कहब मुदा जरूरी अछि जे औंसि रामबहादुर सार्वजनिक पुस्तकालय (मेंहथ) केर भाग्य 1961 सँ 1981 धरि दनदनाइत-सनसनाइत उत्थ सँ उत्थान होइत रहल छलैक। पुस्तकक संख्या 1300 लगभग गोटाँक सहयोगेँ आ 1800 लगभग सरकारी अनुदान सँ, कुल 3100 सँ बेसीए (दु अलमारी भरि) जमा भए गेल छलैक। अनुदान सँ पूर्वे दु-दू खेप एस.डी.ओ. एवं जि. शिक्षा पदाधिकारीक निरीक्षण भेल छलैक, तिनकर स्वागत-सत्कारक व्यवस्था उत्तम रीतिएँ सकल समाजक सहयोगेँ भेल रहैक। मध्-भात, दही-चीनी-रसगुल्ला ओ पाँच पहेरा आमक व्यवस्था भेल रहैक। चाह-जलखै आ भोजनादिक व्यवस्था-बात नित्या-नन्दजी एवं तकरा क्रियारूप देब हमरे पर छल।

ई पुस्तकालय केवल रामबहादुरजीकेँ श्रद्धांजलिस्वरूप लेल नहि स्थापित भेल छल, वरंच वास्तविक रूपेँ ई एकटा सामाजिक परिवर्तनक माध्यम छल आ से, प्रायः 4-5 वर्षक अभ्यन्तरे बहुत रास बदलाओ निखरि-कए सोझाँ आबय लागल छल। यथा प्राथमिक स्कूल 'लोअर' सँ 'अपर' प्राइमरी भए गेल छलैक बातकेँ यदि बुझल जाए जे हमर गाम चारिम वर्गमे (1957 ई.) कोठिया बोर्ड मिड्ल स्कूल मे लिखाओल गेल छल मुदा हमरे छोट भाय रमेशजी (मैथिलीक लेखक, अवकाश-प्राप्त उप-समाहर्त्ता) केर नामाँकन कोठिया स्कूलमे छठम वर्गमे भेल छलनि। तकर कि सक? आन गाम कि वा कर-कुटुमक गाम बूझि मेंहथक अधिकांश धी-बेटी तेसर किलासक बाद जे पढ़ाइ छोड़ि देबालेल अभिशप्त जकाँ छलि, से सब आब कम सँ कम पाँचम वर्ग धरि तँ गाममहिं सँ करए लागल छलि। हमर अपने तीन-तीनटा बहिन, परशुरामजीक पुत्री, देवनारायणजीक पुत्री सहित गोट दसेक बेटी-छौंड़ी छठम-सातमोक पढ़ाइ कोठिया स्कूलसँ कए आबए लागल छलि।

बिजलीक लाइन गाममे आबए, ताहि लेल जे विद्युत-अनुमंडलीय अभियंताकेँ आवेदन पड़ल छल, सेहो एही पुस्तकालय मे बैसिकए सर्वश्री रुद्रकान्तजी, तुहिननारायणजी आ लालबाबू लोकनि तैयार कएने छलाह। नहिना मधुबनी सँ कमलाक पश्चिमी तटबंध (कछहरि) दऽ कए धारिक निरीक्षण बोर्डक सड़क केर पक्कीकरणोक लेल यत्न भेल छल

पृ-11

जखन मधुबनी अनुमंडल कार्यालय एवं दरभंगा जिला मुख्यालयमे जा-जाकए घमना पड़लैक, तँ द्वितीय पंच-वर्षीय योजनाक ई काज सब तृतीय पं.व.यो.काल मे (शुरुहेमे) निष्पादित भेल छलै, तहिया महिनाथपुर-कोठिया-पट्टी सन-सन बहुतो पड़ोसिया गामकें डाह-ईर्ष्या भेल छलैक; तकर उपरान्त ओ गाम सब तत्कालीन विधायक (हमर गोसाँ) कें जहिं-तहिं बाट चलैत देत रहै छलाह सेहो देखल अछि।

पुस्तकालयकें भारत सरकार सँ बेश पैघ आयरन-चेस्ट' सनक रेडियो-सेट भेटल छलैक (1962-जनवरी-मार्चमे), ताहि पर भरी गामक लोक भोर-8 आ राति-8 बजे सँ 9 बजे धरिक हिन्दी-अंग्रेजीक समाचार सुनैत छल। समय पर रेडियो खोलब-बन्द करब हमरे (सहायक पुस्तकालय-ध्यक्ष) काज रहैत छल। खासबात ई रहैक जे ई रेडियो बिना स्पीकरे नै बजैत छलैक (in-built-speaker नै रहैक सेटमे)। तँ एकरा कम्युनिटी (सामुदायिक) रेडियो कहल जाइक। एहि स्थिति मे पुस्तकालय-बंगलाक एक कोन पर एकटा तीस-फिट्टा भरिकम बाँसमे रेडियोक भोंपाकें बान्हि टाँगल गेल छलै आ भरि गाम आवाज पहुँचैक, ताहि लेल ओहि बाँसकें आध-आध घंटापर घुमाबए पड़ैत छलैक; नै तँ दोसरे दिन कोनो टोलक उपराग सुनय पड़ैत छल विशेष कए 1962 केर चीन-भारतक युद्धक समयमे। कहि सकैत छी जे 70-75% अनपढ़-किसान वा मजदूर-बोनिहार-भरिसबारक बीचहुमे समाचार ओ रेडियो पर पटना केन्द्रसँ चौपाल कार्यक्रम सूनब एकटा सुखद अनुभूति बनि रहल छलै।

एही पुस्तकालय-कक्षमे '64 सँ 70-72 ई.क बीच भवानीपुर गामक गमैया-डाक्टर (जे निष्णात कम्पाउन्डर मात्र रहथि) संगेसँ तथा बिजली मिस्त्री अनिरुद्धबाबू (भवानीपुरक) सेहो रहल छलाह — गोआँक सहमति सँ। ई दुनू गोटे आस-पड़ोसक सब गाममे साइकिल सँ भ्रमण कएल करथि आ मोटामोटी सर्वप्रिय भए गेल रहथि। आ हिनके दुनूक सूत्रसँ हम भवानीपुरक जमाए (समय-पूर्व) बनि गेल रही।

हम गाममे चहरैलहुँ (1970 जुलाइ), तकर बाद अन्य कर्मचारि नरेशजी, दुर्गानन्दजी, रवीन्द्र, गौरीमा, जुबीदार भाइ (हमर दियादमोसँ) खेप-खाचिबर -चलैतानि मुदा प्रगति थकमका गेलैक। एही अवधिमे गाममे दोपार्टी भए गेल रहैक, भरि गामक जनुआ-मुनुआ आ कलबलिया लोकनि एक दिस आ पूर्व मिथाक्ष-गामक जबर्दस्तीक जमीन्दार पाँच-दसटा जी-हजूरी एवं लाठीवलाक संग दोसर दिस।

फुटबॉलक सेटिंग : मेंहथहु मे एकटा टीम रहैक, तै मे 30 टा सँ बेसी समर्थ खेलाड़ी रहैक; मिड्डल-हॉटल छदद करैत — 16 सँ 30-32 बरखक बयस वला; मैट्रिक सँ स्नातकोत्तर धरिक शिक्षा वला आ किछु अल्प-शिक्षितो।

कृपानन्दजी आ सत्यनारायण ठाकुर उच्च श्रेणीक 'बैक-पोजिसन' (फुल-बैक वा हाफ-बैक दुनू) वला प्लेयर छलाह। नारायण चौधरी, पीताम्बर (इंडियन नेवी मे जाइत-जाइत आ तकरा बादो जहन-तहन), तृप्तिनारायणजी आ नागेश्वरजी (हमर पितियौत) आदि नीक कोटिक (तेजस्वी दौड़निहार आ बामा-दहिना दुनू पैर चलैत) 'सेंटर-फारवर्ड' छलाह। गणपतिजी तथा कृष्णदेवजी (दहिनवारि रौन, पछाति मास्टर सा.) नीक गोली रहथि। भलू मंडल, गौरी भा (भुवरि टे.), सीताम्बर, वेदानन्द (सब मुख्य: रौनि) लोकनि पढ़ाइ मे पछुआ किन्तु खेल मे बेसी टिकाउ आ विश्वसनीय छलाह।

एकबेर गरमी तातिल मे तीनटा 'कप-वला (ट्रॉफी) -चैम्पियनशिप' रोहुल गेल छलै। घोँघरडीहा बनाम मेंहथ / खड़ौआ बनाम मेंहथ आ रैमा बनाम मेंहथ। रैमाक टीम मे कोठिया-पट्टीक 'बीड़ो' तँ मेंहथहु मे भरामक रामचन्द्र सिंह (सं.फॉ.) बीड़ो कएल गेल छलाह। कृपानन्दजी प्राय: सेवा मे आबि गेल रहथि (1964-65), तैं केवल दुइए मैच मे खेलाएल रहथि। से दुनू मैच क्रमश: खड़ौआ तथा रैमा सँ मेंहथ जीतल छल मुदा तेसर मे हिनका नहि रहने तथा घोँघरडीहाक टीम 20 नहि, 21 छलै, ताहू कारणे तीन-एक सँ हमर गाम हारल छल।

ई सबटा मैच आ चैम्पियनशिप अइमार फुरुक टिबई-
वाल स्कूल- ग्राउन्ड मे भेल रहैक। एहि दुनू ठाकुरजी
(के.एन.टी./ एस.एन.टी.) केर व्यूह-भेदन केहनो भारी टीमक
लेल असम्भव जकाँ रहैत छलैक, से हमरा आँखिक
-देखल अछि। अस्तु!

एहेन विलक्षण टीमक फुटबॉल-ग्राउन्ड
(कल्ली-पोखरिक कात मे-उत्तरी भाग मे) अकस्मात, अजरजोड़ी
बन्दूकक नोंक पर हड़पि लेल गेल छलैक गेहूम मे।
तें गाम दोपारी! तें विरोध पराकाष्ठा पर। 99% धरि
गाम भरी गामक पढ़ुआ लोकनि
कलकतिया- नोकरिहारा समेत प्रो. राजेन्द्र झा, प्रो. देव
प्रो. ध्यनेश्वर झा, प्रो. परशुराम झा, प्रो. राजेन्द्र झा, प्रो. देव
ना. ठाकुर, लालबाबू, मधुबनजी, इन्द्रकान्तजी प्रभृतिक
सक्षम नेतृत्व पाबि संगठित भेल छला आ धनेश्वर
जीक अपमानक बदलामे जमीन्दारक जेठ सपूत (जे
बन्दूक भाँजैत फुटबॉल ग्राउन्ड पहुँचल रहथि पिताक
बाँहि पुरैत) केँ अन्ततः बमिसार (जेहल) मे हप्ता
भरिक लेल बन्हबा देने छलथि ई छलैक एकताक
फल! मुदा से बड़ महग औलि छल! गाम सँ फुटबॉल
केर बीजघाति उपटिए गेल! तहिना, पुस्तकालयो, श्रीहीन होइत-
चल गेल!

□ **गुरु-शिष्य ओ सेवा-व्रत :** श्रीमान् भवानन्द झा असाधारण
सूझ-बूझ ओ मेधा-प्रतिभा बला अभियंता छलाह।
ठेंगा-हरिपुर बासी, एहि बी.एन.झाक जौति बढ़ैत रहलि-
सातम-आठम-नवम दशक (1965-1995) मे। सहायक अभि-
यंता सँ अतिभक्तित बिहारक चीफ-इंजिनियर (इंजिनियर-इन-चीफ
सहित) होइत 'बिहारक विश्वेश्वरैया' पर्यंत कहओनिहार एहि महा-
मानव लग प्रत्येक पिछुआ भुभुआने लागैछ। के करत विश्वा-
-स 50 वर्षक बाद जे हमरा लोकनिक एकरा एहनो महाविकल्प समाड़
भेल छलाह जे प्रत्यक्ष वा परोक्षरूपें सोम-कमाँड, कोसल-नहरि, डी.भी.
सी., तेनुघाट, बराकर-बाँध, राँचीक आसपासक कतेक जलाशये योजना (डैम-
-निर्माण सहित) गंगा नदी पर गाँधी-सेतु (पटनाक आरेखक-स्वप्नदर्शी रहथि!
जे एहेन-एहेन हजारो-लाखों करोड़क योजना-परियोजनाक सूत्रधार-संचालक-
महा-पर्यवेक्षक होइतो, जीवन-पर्यंत एकटा मड़ौसी खपड़पोश (ठेंगाक ओ रथाजी
निवास हमरा बेर-बेर देखल अछि) मे बितौलनि। बड़का-बड़का करोड़-
पति- अरबपति ठीकेदारकेँ सैंहन्ते रहि गेलैक जे एक कप चाहो
हुनका पियबितनि कि वा एक खिल्ली पानो खुअबितनि।

ताही महाप्रताक सहोदर, ओही लोक निर्माण विभाग मे कार्यपालक अभियंता (अनुज- श्री सूर्यानन्द झा) सेहो छलाथिन मुदा से सर्वथा दोसर लोक रहथिन।

....आ ताही गुरुक पट्ट-शिष्य (कार्यक्षेत्र मे) रहथि हमरालोकनिक मार्गदर्शी कृपाबाबू। भेलैक एना जे संसारक सभ सँ नमहा नदी पुल (5.750 कि.मी. प्रायः) गाँधी सेतुक निर्माण हेतु जखन भारत सरकारक स्वीकृति (1970-71: पंचम पंचवर्षीय योजनान्तर्गत) भेटलैक, तखनेसँ-तहियेसँ एकटा ग्लोबल-टेंडर द्वारा विश्व-स्तरीय निर्माण एजेन्सीक चयन प्रक्रिया चलल छलैक आ से 'गैमन इण्डिया' केर चयन होइते, दोसर दिस कार्य-गुणवत्ताक निरीक्षण-परीक्षण हेतु सुयोग्य नहि, सुयोग्यतम अभियांत्रिक कार्य-दलक खोज-बीन सेहो चलल छलैक। ई पूरा निर्माण कार्य 1972 सँ 1982 ई. धरि चलल छलैक आ मई-1982 मे तत्कालीन प्रधान-मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी एकर उद्घाटन कएने छलीह।

से, ओहि वृहदाकार परियोजनाक सम्पूर्ण देखभालक भार जखन मनानन्द बाबूक हाथ सौंपल गेल छलनि, तँ (हमरा मोन अछि- हमरी पदस्थापन पटने छल) ओ दू टूक शब्दमे तत्कालीन मुख्यमंत्री
(डा. मिश्र) केँ कहने छलथिन एकरा शर्तक रूपेँ जे निरीक्षण-परीक्षण हेतु अभियांत्रिक कार्यदल हम अपना हिसाबेँ बनाएब आ तकर कार्य-प्रक्रिया मे कोनो तरहक हस्तक्षेप कोनो मंत्री-संत्री नहि करताह। आ से यथावत मानलो गेल छलनि। ई बड्ड पैघ बात (कहु जे आश्चर्य वा अजूबे जकाँ) बूझल गेल रहैक ताहि समय मे, असाधारण रूपेँ प्रिंट-मीडिया मे चर्चित सेहो।

आ हम मैथिल लोकनि विशिष्ट गौरव-बोधक अधिकारी छी जे एहि विश्व-विश्रुत परियोजनाक संचालन-परिचालन-निरीक्षण एवं सावधिक परीक्षण मे मुखियाजी मनानन्द बाबूक संग उप-मुखिया वा सरपंचक भूमिका मे हमरा सभक अपने कृपानन्दजी छलाह (यद्यपि अभियंता आओरो कएक छलाह दल मे किन्तु कार्यनिष्ठा एवं ईमानदारीक प्रतिमूर्ति चैहटा! अपना सन एकमात्र अपने! हमरा सनक बहुतो लोक हुनकहि दिनमे निर्माण देखल-जानल छल। एहि ईमानदारी तथा कर्मठताक एकटा एहन सत्य घटनाक विवरण रखैत एहि निबंधक इतिश्री करए चाहब जे सिनेमाक रील जकाँ हमरा मानस-पटल पर विगत 40 वर्ष सँ यथावत अंकित अछि। एहेन-एहेन साँचमे की, कहियो आँच आबि सकैए!

(प्राय:) समय- 1980-81 क एक राति। स्थान - गाँधी सेतु (निर्माणाधीन)क हाजीपुर-मुहाना पर राजकीय निरीक्षण-भवन परिसर। अस्थायी बिजलीक सुरंग मे जग-जग टाँगल तार आ छोट-छोट पीयर-पीयर क्वाटर मे टिमटिमाइत लट्टू बॉल। तकरा छपने-झँपने अबैत सन गंगा कातक करैसी अन्हारक महजाल। शांत शिविरमे अशांत वा उद्विग्न-मना बइसल एक अयाचित दरद-हरल मैदान, ओढ़ाइन आ टेबुल पर भरले राख कागत-पत्र-फाइल पसरल।

बाहर पर, बीच बालुका-राशि पर (गंगाक उतरबरिया कछेर दिस) दूर-दूर धरि पसरल लोहा-लक्कड़, छोट-पैघ रोडी-ढम्मुक अनेक सॅवल-क्रेन-हिटाची-टाटा-कैटरपीलरक भरबाही मशीनक ढरोहि। आ तै बीच-बीच मे सिमेन्ट-लोहा-कंक्रीटक जमौआ बड़े-बड़े चट्टान (खण्डांश) जहतरि-बहतरि ढंगाड़ल आयल।

तै सिमिटिया चट्टान सभकें हथौड़ा मारि-मारि कोण-किनारकें झाड़ि-झाड़ि देखैत आ 'टेमर' जँचैत एक निरीक्षक। 'यहाँ से तोड़ो' - 'यहाँ से फोड़ो' - 'रॉड निकालकर दिखाओ' रॉडकी मोटाई 16 एम.एम. क्यों? 'रॉड टाटा-ब्रैण्ड क्यों नहीं'? बालू क्लासिक सोन-सैण्ड क्यों नहीं? 'स्टोन-चिप्स अंडर-साइज क्यों'? एहेन-एहेन पचासनि सवाल गेमन इण्डियाक मुख्य अभियंता सं होइए, हो आइयो, फेर, कालिहयो आ फेर परसुओ! ओकर प्रोजेक्ट डायरेक्टर तंग-तंग होइए। ओ अपन मातहतक लघु सैनिक समक्ष बैंड्र करैए। ऊपरके बॉस अपना सँ नीचाँ, तै सँ नीचाँ, तहू सँ नीचाँ ...... होइत-होइत सभसँ नीचाँ धरि खौंघाइल जाइए मुदा सही जवाब नै भेटैए। अंतत: निम्न-स्तरीय वा स्तरहीन-निर्माण प्रमाणित करैत बीसो सँ अधिक खण्डांश (जकरा अंग्रेजीमे 'सेगमेन्ट' (Segments) कहल जाइछ, कें खारिज वा रद्दी घोषित करबा प्रतिवेदित हेबाक छलैक-ठीक अगिला दिन।

ओहि कम्पनीमे तँ हड़कम्प मचबे करतैक, संगहि (ओही कालखण्ड मे नया-नया बनल) टेक्निकल सचिवालय पर्यन्तो प्रकम्पित छल, किएक तँ ओहि कम्पनीक चयन ग्लोबल-टेण्डर सँ आ दिल्लीक सहभागिता सँ भेल रहैक। दोसर महत्वक बात छलैक जे ओहि 'सेगमेन्टेशन-ब्रीज' क तैयारी एकदमे अभिनव रहैक जकर व्यावहारिक ज्ञान अधिकांश अभियंताकें नै छलैक ताहि दिनमे। तेसर बात जे खास रहैक से छलैक-एक-एकटा टनाइ कएल खण्डांशक लागत लाखहु रुपैया पड़ैत छलैक, तें कम्पनीकें करोड़क नोकसान संभावित छलैक।

गुरुदेव (बी.एन. झा) साहेब चरणबद्ध रूपेँ उक्त प्रतिवेदनक प्रक्रिया सँ अनजाने नहि, ओहिमे शामिलो छलाह, स्थल-निरीक्षण काए स्वयं निम्न-स्तरीय निर्माण सँ आश्वस्तो भेल छलाह। ओहि दिनमे फोन पर भारते सरकारक एकाधिकार छलैक तथापि छत्तासँ उड़ल मधुमाछी जकाँ फोनसब

तेंदू दिन अनवरत घनघनाइते रहल छलै। चोडा हाथसँ रखलौं नहि कि फेर घनर-घनर....!

ओहि विघ्न-पुराओने सनक निरीक्षण भवनमे नाम मात्रेक दूटा प्रहरी छलै जे बाहरी मे बैसल तमाकुल लटा रहल छलै। भीतरमे एकटा आदेशपाल साहेबलेल रोटी-दालि-तरकारी बना रहल छलै आ साहेब अपन शयन-कक्षमे, टेबुल-कुरसी लगौने रिपोर्ट-शीटर्समे लागल छलाह। एहि शिविरसँ थोड़े हटिकए हाथीक देखौआ दाँत सन एकटा पुलिस-पोस्टो छलैक जाहिमे कखनो दूटा लाठी-भाटी सिपाही रहैत छलै आ कखनो सेहो नदारद।

राति, घड़ीक हिसाबें बहुत नै भेल रहैक मुदा आबादी सँ दूर गंगा-तटक एहि टोलवा पर एकदम सन्नाटा पसरल रहैक। कि तैखन एकटा गार्ड बरंडा परक खिड़की लग लाठी पटकैत, ओही खिड़की लगाकए भीतरी बैसल हाकिमकेँ आवाज दैत बाजल— साहेब—साहेब! कोई जीप आई है फाटक पर। दो-तीन आदमी उतरा है जो फाटक खोलने बोलता है। का, तो हाकिम से मिलना है।

साहेब ओतहि बैसले-बैसल खिड़कीक एकटा पल्ला कनिएँ फोलैत, गार्डकेँ कहलखिन— अभी ई कौन है जी? बोलो कल सुबह मे आएगा— जो भी है... कल आठ बजे आएगा!

किन्तु तावतकाल धरि दूटा भारी-भरकम मोटैला सनसनाएल बरंडा पर चढ़ि गेल छलैक। आ गार्डकेँ धकिअबिते जकाँ कोठलीक ओठङाओल केबाड़केँ धक्का दैत, भीतर पैसि गेल छलै। ई गोरसँ चेहरा देखलनि— एकटाक मूँ-कान चिन्हार सन लगलनि, प्राय: साइट परहक मुंशी-तुंशी छल हैत। दोसर गोटे साफे अनचिन्हार--- देखबामे एकदमे सुलताना डाकूक सहोदर। डाँड़मे चमौटी आ चमौटीमे ओजनगर पेस्तौल लटकल। दुनूक हाथमे एक-एकटा ब्रीफ-केस। चेहरा पर गलौंची कहने।

— आपलोग.....? क्या बात है? इस समय कोई काम है मुझसे?

— जी सर! घबराइएगा नहीं! साहेब भी आए हैं, गाड़िये मे बइठल हैं। ये (हाथक ब्रीफ-केस देखबैत) सर, आपके लिए कुछ लाए हैं!

— अच्छा-अच्छा! क्या है इनमें? मैंने तो किसी को कुछ लाने के लिए नहीं कहा था!

— सरजी! सरजी! इसमें (अपन दुनू हाथक थापड़ जकाँ देखबैत, प्राय: संकेतसँ पाँच+पाँच=दस कैर) इतना अभी है। और जो हुकुम होगा, कल-परसु फिर आ जाएगा— साहब बोले हैं....!

— ऐ! चलो, ये उठाओ और यहाँ से भागो! चलो, भागो! ----

ई एतबा कहैत साहेब कोठलीक दोसर कोनमे टेबुल पर राखल फोन दिस डेग बढ़ौलनि किन्तु तखने मे एकटा तेसर प्रवेश केलक कोठलीमे।

— सर-सर! सुनिये ना! फोन-ओन किसको कीजिएगा? इतना जो दिन-रात खटते हैं सो का मिलता है? ई नोकरी से आजकल गुजारा चलता है का? ओ तेसर आगंतुक समुझौलैन जकाँ कहलकनि।

— सुनिए-सुनिए! नौकरी हम करते हैं, क्या मिलता है, कितना मिलता है – उससे आपको क्या मतलब? चलिए, उठाइए ये सब और चलते बनिए यहाँ से! हमारा गुजारा कैसे चलेगा, वो मुझे सोचना है न, आप उसमें टाँग मत अड़ाइए!

— सर-सर! बाल है, बच्चा है! परिवार का राजी-खुशी सबे चाहता है सर! इसलिए घर आइल लक्ष्मी का अपमान तो नहीं न होना चाहिए सर!

— सुनो-सुनो बाबू! कितनी उमर है तुम्हारी? और वजन कितना है?

— सर! 58 बरिस हो चला है! आउ ओजन तो ···80 किलो तक···!

— और बाल-बच्चे कितने हैं?

— सर, पाँच हैं! तीनगो बेटी और दोगो लड़का है! काहे सर! ई सब काहे पूछते हैं?

— देखो, तुमको वेतन मिलता होगा पाँच-छव हजार। और फैमिली होगा, माता-पिता होंगे, तो नौ आदमी, है कि नहीं?

— जी सर! सो तो है! ओ तीनू गुर ताक लागल सहेलक।

— हाँ, तो तुमको चोरी-डकैती करना पड़ेगा, हो सकता है। और तुम जब ये सब बेइमानी-शैतानी करोगे, तो बाल-बच्चे तुमसे भी बड़े शैतान-गुंडे-मवाली होंगे। समझे! तुम्हें नमक-रोटी के साथ दारू-मुरगा भी चाहिए। तुम्हारा वजन यही हराम का खा-खा कर 80 किलो हुआ है! और बी.पी.-सुगर भी बढ़ा होगा, जाँच कराया है?

— नहीं सर! एकबार चक्कर आ गया था, तो डाकटर बोला था ऊ दोनों जाँच कराने, नहीं करा पाये!

— बस-बस! यही समझने की बात है! मैं खुद भी स्वस्थ हूँ और बाल-बच्चों को भी तन और मन से स्वस्थ रखना चाहता हूँ। सभी परिश्रमी हैं। मन लगाकर पढ़ते-लिखते हैं। घर में न नाजायज आमद, न फालतू खर्च! न चोरी-डकैती का कोई डर! और ये मुँहबाला जो पेस्तौल लटकाये घूमता है न, कहीं सिपाही-हवलदार से रिटायर हुआ होगा और कम्पनी के जी.एम. का बॉडी-गार्ड है! है न जी? तुम्हारा नाम रामेश्वर सिंह और घर बिहटा है न? पेस्तौलवला अपन नाम-गाम सुनिते मूड़ी झुकौने तत्काल

कोठलीसँ बाहर भ' गेल। ओकर घाड़ ओतेक नै झुकल रहैक, जतेक टेरल-टेरल कइल-कइल मोंछ।
— हाँ तो अब आपलोग भी ये माल-असबाब उठाइए और जाकर अपने बॉसको बोल दीजिए कि यह पंडित दो क्या, बीस ऑफिसमें भी बिकाऊ नहीं है। और यह भी बोलिएगा कि अभी कम से कम डेढ़ दसक तक मृत्यु-योग नहीं है हमारा"!

दुद स्वरेँ एतबा कहैत, ओकरा सभकेँ बाहर बरंडा परहुक सीढ़ी धरि अरिआरत देलखिन। ओ दुनू बरंडा सँ उतरि एकबेर पाछाँ घूमि रिनुका भरि आँखि देखलक, कँल जोड़ैत आ माफी मँगैत फाटक लगक इस्टाट भेल गाड़ी मे जा बैसिआएल - फुर्र!

ई असाधारण हाकिम आर क्यो नहि, हमर, हमरा गामक अथवा हमरालोकनिक गौरवशाली 'अयाची-परम्परा' केर अंश: आकुरी कृष्म (भानन्देजी ओ)कृपानन्द ठाकुरजी छलाह। आ एहि 'घटनाक अनुगूँज' पहिले-पहिल चेतना समितिक, एक बैसार मे मैथिल-गौरव भवानन्देबाबूक मुहेँ (संक्षेपमे) आ पछाति स्वयं ठाकुरजीक मुहेँ दरभंगा-प्रवास (1989-90 क हमर गृह-प्रवेश, लक्ष्मीसागर कॉलोनी) कालमे सुनने छलहुँ।

तहिया ठाकुरजीक मुहेँ बहराएल ओ(बाल-बच्चाक मादे भविष्य-वाणी वला) बात सभ आ आमुक मैथिली साहित्याँगनक 'कुरुक्षेत्र-विजयी गजेन्द्र' आ कि 'पंजी-प्रथाक व्यवस्थापक गजेन्द्र' कि वा 'ई-पत्रिका विदेह संस्थापक-सम्पादक गजेन्द्र' अथवा कतेको 'अउरल-अभेलित मैथिलीक साहित्यकारकेँ प्रति स्थापित करैत गजेन्द्र' कें निंघारैत-हियासैत हम सोचै लेग भेल छी! संग्रहि कुल-वधू प्रीतिक विकास-वादहि पूत पिताके चर्मैं! यैह थिक-माता-पिताक श्रेष्ठ गुण-सूत्रक तथ सुलक्षण संस्कारक विलक्षण प्रमाण!

हैं, मुदा कचोटक बात इहो मैन रहबाक छी जे एहि चर्चित गुरु-शिष्यकेँ सामाजिक रूपेँ जेहन मान-सम्मान भेटबाक चाहिऐ छलनि, जकर ईलोकनि सभ तरहेँ अधिकारी छलाह; से भेटि नहि सकलनि। देखैत छी, सामान्यो धन्धा-पेशाक लोककेँ अथवा मूढ़-सोंच भाँजिकार, क्षदीक बदला हेडलुमी चमत्कार, एक-दू बेर विधायक-सांसद वा मंत्री-संत्री भ' जाइए, सेहो तिकड़म आ जोगाड़क बलेँ पद्म-पुरस्कारक तगमा पाबि जाइए। तेँ लगाम गाँधी सेतु सन-छन कालजयी कृतिकें जमीन पर उतारि देखओनिहार आ सेहो जीवनकेँ दाओ पर लगाकए निर्लिप्त सेवा देनिहार युग-पुरुषक नाम पर दरभंगा-मधुबनी मे एकटा पथ-पार्क-पुल वा चौक-चौराहो पर्यन्तक नहि होयब साबित करैछ मैथिलक अकर्मण्यताकेँ!

करोट फेरैत अथवा गाम, अपन जिला-जवार आ देश-कोसकेँ मजगूत कल्ह-सन्हेगी सँ युक्त कैनिहार कीर्ति-पुरुष-कृपानन्द जीक पुण्य-स्मृतिकें शतशः नमन! □

सम्पर्कः
शिवशंकर मजुमदार
फ्लैट सं. बी/1, ... अपार्ट.
डाक बँगला रोड, डिब्डीपाड़ा,
राँची (झार.) - 834001
(मो. 9931346334)